*Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat*
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **14.07.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

**संतान के लिए दुआ और इच्छा, इस सोच के साथ और इस दुआ के साथ होनी चाहिए कि ऐसी संतान हो जो दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाली हो।**

**वाक़्फ़ीन-ए-नौ के माँ बाप को अपने बच्चों की तर्बियत की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए और उनके लिए दुआ भी करनी चाहिए कि वे बड़े होकर दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले हों, यह नहीं कि केवल वक़्फ़-ए-नौ का टाईटिल लगाकर कह दिया कि हम तो अपने काम कर रहे हैं बल्कि पहले वे जमाअत से पूछें कि क्या जमाअत को आवश्यकता है कि नहीं? जमाअत यदि अनुमति देती है अपने काम करने की, तो करें अन्यथा उनको निष्ठापूर्वक अपने संकल्प को पूरा करते हुए अपने आपको वक़्फ़ के लिए पेश करना चाहिए।**

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- बहुत सी औरतें और मर्द लिखते हैं कि हमारे यहाँ औलाद होने वाली है, उसके लिए दुआ करें अथवा यह कि हम क्या दुआ करें इस संतान के लिए या फिर यह कि हमारी औलाद है, बच्चे हैं और बचपन से जवानी की ओर बढ़ रहे हैं, उनके प्रशिक्षण की चिंता रहती है। उनके लिए क्या दुआ करें, किस प्रकार उनकी तर्बियत करें कि हमारे बच्चे उचित रास्तों पर और नेकियों पर क़ायम रहें। अल्लाह तआला ने यह हम मुसलमानों पर उपकार किया है कि क़ुर्आन करीम में विभिन्न स्थानों पर बच्चों के जन्म से पहले से लेकर तर्बियत की विभिन्न अवस्थाओं में से जब बच्च गुज़रता है तो उसके लिए दुआएँ भी सिखाई हैं और तर्बियत का तरीक़ा भी बताया है तथा माता पिता के दायित्वों की ओर भी ध्यान दिलाया है। यदि हम ये दुआएँ करने वाले और इस तरीक़े के अनुसार अपना जीवन यापन करने वाले और अपने बच्चों की तर्बियत की ओर ध्यान देने वाले हों तो एक नेक पीढ़ी आगे भेजने वाले बन सकते हैं। इस बात में कोई सन्देह नहीं कि बच्चों की तर्बियत कोई सरल कार्य नहीं तथा विशेष रूप से इस ज़माने में जब पग पग पर शैतान की पैदा की हुई रूचिकर बातें भिन्न भिन्न रंगों में प्रतिदिन हमारे सामने आ रही हों तो यह बड़ा कठिन काम है लेकिन अल्लाह तआला ने जब दुआएँ और साधन बताएँ हैं तो इस लिए कि यदि हम चाहें तो स्वयं भी, अपने बच्चों को भी शैतान के हमलों से बचा सकते हैं परन्तु इसके लिए निरन्तर दुआओं, अल्लाह तआला की सहायता और घोर परिश्रम और प्रयास की आवश्यकता है। एक निरन्तर संघर्ष की आवश्यकता है और वास्तविक मोमिन से यही आशा की जाती है कि वह अल्लाह तआला के साथ जुड़कर अपने आपको भी और अपनी संतान को भी शैतान के हमलों से बचाए, न कि निराश हो जाए या थक जाए तथा भयभीत होकर अपनी नकारात्मक सोचों को अपने ऊपर हावी कर ले।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस क्रांति को पैदा करने के लिए दुनिया में अल्लाह तआला की ओर से भेजे गए उसका अंग बनने के लिए हमने अपनी समस्त प्रतिभाओं तथा सामर्थ्यों को उपयोग में लाना है तथा अपनी नई पीढ़ी में भी इस आत्मा को फूंकना है, जो हमारे उद्देश्य हैं उनके लिए दुआएँ भी करनी हैं, उनकी तर्बियत भी

करनी है कि समाज के इन सारे गन्दों तथा बुराईयों के बावजूद हमने शैतान को सफल नहीं होने देना, इन्शाअल्लाह तआला। दुनिया में ख़ुदा तआला की हकूमत क़ायम करने का प्रयास करना है।

अल्लाह तआला ने हमें क़ुर्आन मजीद में नेक संतान के लिए दुआएँ सिखाई हैं। एक स्थान पर हज़रत ज़िक्रिय्या अलैहिस्सलाम के द्वारा दुआ सिखाई और वह दुआ यह है कि رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ अर्थात- ऐ मेरे रब्ब, मुझे अपने पास से पवित्र संतान प्रदान कर दे। यक़ीनन तू बहुत दुआएँ सुनने वाला है। अल्लाह तआला ने स्वयं यह दुआ सिखाई कि मैं दुआएँ सुनने वाला हूँ इस लिए तुम भी कहो कि ऐ अल्लाह तू दुआएँ सुनने वाला है इस लिए हमारी दुआएँ क़बूल कर और हमें पाक औलाद बख़्श। अतः जब दुआ की इच्छा हो, जब पवित्र संतान की इच्छा हो तो उसके लिए दुआ भी होनी चाहिए परन्तु साथ ही माँ बाप को भी उन पवित्र विचारों और नेक कर्मों के धारण करने वाला होना चाहिए जो नेकों और नबियों के गुण हैं, वे धारण करने की आवश्यकता है। कई बार मांएँ दीन की बातों की ओर ध्यान दिलाने वाली होती हैं, इबादतें करने वाली होती हैं तो पिता नहीं होते। कई बार मर्द हैं तो स्त्रियाँ अपने दायित्व पूरे नहीं कर रहीं। संतान के नेक होने तथा ज़माने के बुरे प्रभाव से बचने के लिए आवश्यक है कि संतान की इच्छा तथा संतान की जन्म से भी पहले पुरुष और महिला दोनों नेकियों पर अमल करने वाले हों।

क़ुर्आन करीम में हज़रत ज़िक्रिय्या के हवाले से इस दुआ का भी वर्णन मिलता है सूरः अम्बिया में कि رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ कि ऐ मेरे रब्ब, मुझे अकेला न छोड़ और तू सब वारिसों से बेहतर है। इस दुआ में भी जब अल्लाह तआला को ख़ैरुल वारिसीन कहा है तो स्पष्ट है कि संतान की दुआ केवल इस कारण से नहीं कि संतान हो जाए और वारिस पैदा हो जाएँ जो दुनिया के मामलों के उत्तराधिकारी हों बल्कि ऐसे वारिस अल्लाह तआला की ओर से मिलें जो दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने वाले हों और ज़ाहिर है ऐसी दुआ वही लोग माँग सकते हैं जो स्वयं भी दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले हों। यदि दुनियादारी में इन्सान डूबा हुआ है तो नेक वारिस किस प्रकार मांगेगा। यदि कोई औरत केवल इस लिए संतान की इच्छा कर रही है कि पति की इच्छा होती है। ऐसी संतान फिर कई बार परीक्षा का कारण बन जाती है। संतान की इच्छा बड़ी उचित इच्छा है लेकिन साथ ही नेक वारिस पैदा होने की भी दुआ करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि संतान की इच्छा केवल वारिस पैदा करने के लिए न करो अपितु नेक सदाचारी तथा दीन के सेवक वारिस पैदा होने के लिए करो, अन्यथा संतान भी परीक्षा में डाल सकती है। एक अवसर पर फ़रमाते हैं कि-

संतान के द्वारा परीक्षा भी बड़ी परीक्षा होती है। यदि संतान नेक हो तो फिर किस बात की चिंता हो सकती है। ख़ुदा तआला स्वयं फ़रमाता है وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ अर्थात- अल्लाह तआला आप नेक बन्दों का निगरान और संरक्षक बन जाता है। यदि इन्सान भाग्यहीन है तो चाहे लाखों रुपए उसके लिए छोड़ जाओ वह बुरे कार्यों में नष्ट करके फिर कंगाल हो जाएगा तथा कठिनाईयों में पड़ेगा। जो व्यक्ति अपने विचार को ख़ुदा तआला के विचार और इच्छा के साथ जोड़ता है, वह संतान के विषय में निश्चिंत हो जाता है। अल्लाह तआला का परामर्श और इच्छा क्या है? यही कि दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दो।

फिर एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं नसीहत करते हुए इसी संतान के विषय में कि- अतः स्वयं नेक बनो तथा अपनी संतान के लिए एक उत्तम नमूना नेकी और तक़्वा का हो जाओ तथा उसको मुत्तक़ी और दीनदार बनाने के लिए प्रयास और दुआ करो। जितना प्रयास तुम उनके लिए माल जमा करने के लिए करते हो उतना ही प्रयत्न इस बात के लिए करो। फिर आप फ़रमाते हैं कि संतान की अभिलाषा होती है लोगों में तो होता यह है कि कई बार समृद्ध व्यक्तियों को मैंने कहते सुना है कि कोई संतान हो जाए जो इस सम्पत्ति की वारिस हो किन्तु यह नहीं जानते कि जब मर जाएँगे तो उनके साथी कौन और औलाद कौन? सभी ग़ैर बन जाते हैं। संतान के लिए यदि इच्छा हो तो इस उद्देश्य से हो कि वह दीन की सेवक बने।

फिर अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में हमें यह भी दुआ सिखाई है कि وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ अर्थात- मेरे लिए मेरी संतान का भी सुधार कर दे, निःसन्देह मैं तेरी ओर झुकता हूँ

तथा निःसन्देह मैं आज्ञाकारियों में से हूँ। यहाँ औलाद का सुधार करने के लिए दुआ की है तो साथ ही इस बात को भी स्वीकार किया है कि मैं तेरी ओर झुकने वालों तथा आज्ञाकारियों में से बनूँ अथवा हूँ। अतः संतान के लिए जब दुआ हो तो अल्लाह तआला के आदेशानुसार कर्म और अल्लाह तआला का सम्पूर्ण आज्ञापालन आवश्यक है, तभी दुआ क़बूल होती है।

अतः बड़ा भारी दायित्व है माँ का भी और बाप का भी। यदि अपने नमूने इस शिक्षा के विरुद्ध हैं जो अल्लाह तआला ने दी है तो फिर सुधार की दुआ में सत्य भी नहीं होता और जब इस प्रकार का अमल न हो तो फिर यह शिकायत भी ग़लत है कि हमने अपनी औलाद के लिए बहुत सी दुआएँ की थीं लेकिन फिर भी वह बिगड़ गई अथवा हमें परीक्षा में डाल दिया।

फिर अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में एक बड़ी व्यापक दुआ बयान फ़रमाता है कि رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا अर्थात- ऐ हमारे रब्ब, हमारे अपने जीवन साथियों तथा अपनी औलाद से आँखों की ठण्डक प्रदान कर तथा हमें मुत्तक़ियों का इमाम बना दे। यह दुआ औलाद के लिए तथा अपने जीवन साथियों के लिए पुरुषों को भी करनी चाहिए और महिलाओं को भी। जब स्त्री और पुरुष नेक और सज्जन संतान की इच्छा रखते हुए दुआ करते हैं तो फिर संतान की जन्म के बाद भी उनके काम पूरे नहीं हो जाते बल्कि माँ भी, बाप भी, बीवी भी भी तथा पति भी अपनी अपनी परिधि में निगरान और इमाम हैं और यह हक़ उस समय अदा होगा जब ख़ुद भी तक़्वा पर चलने वाले हों तथा अपने बच्चों के लिए दुआ करने वाले होंगे और अपने कर्मों को भी देखने वाले होंगे।

एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- लोग संतान की अभिलाषा तो करते हैं परन्तु न इसके लिए कि वह दीन की सेवक हो बल्कि इस लिए कि दुनिया में उनका कोई वारिस हो और जब औलाद होती है तो उसके प्रशिक्षण पर ध्यान नहीं दिया जाता, न उनकी आस्था का सुधार किया जाता है। दीन सिखाना भी ज़रूरी है। यह नहीं कि बाहर से समय नहीं मिला, सांसारिक शिक्षा में व्यस्त हैं, दुनिया के कामों में व्यस्त हैं। इसके लिए न स्वयं ध्यान दिया दीन को सिखाने में, न बच्चों के लिए कोई प्रबन्ध किया। आस्थाओं को सिखाना, दीन सिखाना बड़ा आवश्यक है। फ़रमाया- और न शिष्टाचार में सुधार किया जाता है। आपने फ़रमाया- याद रखो उसका ईमान व्यापक नहीं हो सकता जो निकट के सम्बंधों को नहीं समझता, जब वह इसमें विवश है तो अन्य नेकियों की आशा उससे क्या की जा सकती है। अल्लाह तआला ने संतान की इच्छा को इस प्रकार क़ुर्आन में फ़रमाया है कि- رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا

अर्थात- ख़ुदा तआला हमको हमारी पत्नियों और बच्चों से आँख की ठण्डक अता फ़रमाए और यह तब ही मिल सकती है कि जब घोर पाप वाला जीवन न व्यतीत करते हों बल्कि इबादुर्रहमान की ज़िन्दगी बसर करने वाले हों और ख़ुदा को प्रत्येक बात पर प्राथमिकता देने वाले हों और आगे खोल कर कह दिया कि وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا कि संतान यदि नेक एवं सुशील हो तो यह उनका इमाम ही होगा। इस प्रकार जैसे मुत्तक़ी होने की भी दुआ है अर्थात अपने आपके मुत्तक़ी होने के लिए दुआ है कि अल्लाह तआला हमें तक़्वे पर चलने वाला बनाए और आगे फिर औलाद के भी मुत्तक़ी होने की दुआ है। इस प्रकार औलाद के लिए केवल यह इच्छा हो कि वह दीन की सेवक हो और विशेष रूप से वाक़्फ़ीन-ए-नौ के माता पिता को अत्यधिक ध्यान देना चाहिए कि अपने बच्चों को दीन की ओर आकर्षित करें।

फिर आप फ़रमाते हैं कि मैं देखता हूँ कि लोग जो कुछ करते हैं वह केवल दुनिया के लिए करते हैं। जीवन से प्रेम की भावना उनसे कराती है, ख़ुदा के लिए नहीं करते। यदि संतान की इच्छा करे तो इस भावना से करे- وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا पर नज़र रखकर करे कि कोई ऐसा बच्च पैदा हो जावे जो इस्लाम के कलमे को बुलन्द करने वाला हो। जब ऐसी पवित्र भावना हो तो अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है कि ज़िक्रिया की भांति औलाद दे दे किन्तु मैं तो देखता हूँ कि लोगों की नज़र इससे आगे नहीं जाती कि हमारे बाग़ है और देश है और इसका वारिस हो तथा कोई सम्बंधी इसको न ले जाए परन्तु वे इतना नहीं सोचते कि दुर्भागा जब मर गया तो तेरे लिए दोस्त दुश्मन,

अपने बेगाने, सब बराबर हैं। तो इस प्रकार जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि विशेष रूप से वाक़फ़ीन-ए-नौ के माँ बाप जो हैं, उनको अपने बच्चों की तर्बियत की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा उनके लिए दुआ भी इस उद्देश्य के लिए करनी चाहिए कि वे बड़े होकर दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाले हों, वक़्फ़ करने वाले हों। यह नहीं कि केवल वक़्फ़-ए-नौ का टाईटिल लगाकर कह दिया कि हम तो अपने काम कर रहे हैं बल्कि पहले वे जमाअत से पूछें कि क्या जमाअत को आवश्यकता है कि नहीं? जमाअत यदि अनुमति देती है अपने काम करने की, तो करें अन्यथा उनको निष्ठापूर्वक अपने संकल्प को पूरा करते हुए अपने आपको वक़्फ़ के लिए पेश करना चाहिए।

अतः संतान के लिए दुआ और इच्छा इस सोच के साथ तथा इस दुआ के साथ होनी चाहिए कि ऐसी संतान हो जो दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाली हो, जो हमारा अर्थात माँ बाप का और कुटुम्ब का सम्मान स्थापित करने वाली हो, अपने दादा परदादा के नाम का आदर क़ायम करने वाली हो। अनेक ऐसे परिवार हैं जिनके बाप दादा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा में से थे, केवल उनकी संतान होना ही काफ़ी नहीं, लोग बताते हैं बड़े गर्व के साथ। अच्छी बात है परन्तु गर्व तब होना चाहिए कि वे नेकियाँ भी जारी हों, कि औलाद होना काफ़ी नहीं बल्कि माँ बाप का यह भी काम है कि अपनी औलाद के लिए यह भी दुआ करें कि वह उनकी नेकियाँ, बाप दादा की नेकियाँ क़ायम करने वाले भी हों और जब यह दुआ माँ बाप कर रहे होंगे तो अपने पर नज़र भी रखेंगे क्यूँकि हम अपने बाप दादा के नाम को जीवित रखने वाले तभी बन सकते हैं जब हम अपने कर्मों पर भी नज़र रखने वाले हों।

अतः अपने निरीक्षण के साथ प्रत्येक को अन्तिम समय तक बच्चों के नेक प्रकृति तथा सुशील होने के लिए दुआएँ करने रहना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला की सहायता उन्हीं लोगों के संग होती है जो सदैव नेकी में आगे ही आगे क़दम रखते हैं। फ़रमाया- एक स्थान पर ठहर नहीं जाते और वही हैं जिनका शुभान्त होता है और अन्जाम बख़ैर के लिए आपने फ़रमाया कि अपने लिए, अपने बीवी बच्चों के लिए निरन्तर दुआ करते रहना चाहिए। फिर आप फ़रमाते हैं कि वह काम करो जो औलाद के लिए सुन्दर नमूना और उदाहरण हो, यह वालदैन का काम है और इसके लिए आवश्यक है। फ़रमाया- इसके लिए आवश्यक है कि सर्वप्रथम अपना सुधार करो यदि तुम उत्तम स्तर के मुत्तक़ी और सज्जन पुरुष बन जाओगे और ख़ुदा तआला को राज़ी कर लोगे तो यक़ीन किया जाता है कि अल्लाह तआला तुम्हारी संतान के साथ भी अच्छा मामला करेगा। फ़रमाया कि क़ुर्आन शरीफ़ में ख़िज़र और मूसा अलैहिस्सलाम की कहानी लिखी है कि उन दोनों ने मिलकर एक दीवार को बना दिया जो यतीम बच्चों की थी। वहाँ अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا उनका पिता सज्जन पुरुष था, यह वर्णन नहीं किया कि वे आप कैसे थे, बच्चे कैसे थे बल्कि माँ बाप का वर्णन किया। फ़रमाया- अतः इस उद्देश्य को प्राप्त करो। संतान के लिए सदैव उसकी नेकी की इच्छा करो तो फिर अल्लाह तआला संतान के भी सामान पैदा फ़रमाता रहेगा, उनकी अच्छाई के लिए और उनके रिज़्क़ के लिए।

अतः यह वह मूल नियम है जिसकी ओर बार बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ध्यान दिलाया है और यह क़र्आनी शिक्षा की ही व्याख्या है कि माँ बाप का अपना नमूना ही बच्चों की तर्बियत में भूमिका निभाता है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हममें से प्रत्येक अपनी संतान के लिए सुन्दर नमूना बनने वाला हो, दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाला हो। दूसरों की ओर दृष्टि डालने के बजाए, कुछ लोगों की आदत होती है कि दूसरों की ओर देखते रहते हैं कि वह कैसा है, अपने सुधार की ओर ध्यान देने वाले हों ताकि अल्लाह तआला हमारी संतान को भी सदैव हमारी आँखों की ठण्डक बनाए रखे और फिर यह क्रम आगे भी चलता चला जाए।



**TOLL FREE NO: 180030102131**